आधुनिककाल

[परिचय, परिस्थितियाँ, शाखाएँ, विशेषताएँ आदि]

B.A.I एवं B.A.III

हिन्दी साहित्य

प्रस्तुतकर्ता

डॉ. जगदीश शरण
सहायक प्रोफ़ेसर हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय भोजपुर
(मुरादाबाद)

(स्वयंनिर्मित)

Scanned with CamScanner

आधुनिक काल : आधुनिक काल के अन्तर्गत काव्य की अलग-अलग प्रवृत्तियों के कारण इसे कई युगों में बाँटा गया है— छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता।

छायावाद : प्रारम्भिक झलक उन्नीसवीं सदी के अन्त में श्रीधर पाठक की रचनाओं में। सन् 1909 में प्रकाशित 'इन्दु' पत्रिका से छायावाद का नया रूप प्रस्तुत। सन् 1920 में छायावाद का निश्चित रूप उपस्थित हुआ। सन् 1927 में जयशंकर प्रसाद के 'आँसू' से छायावाद का परिष्कृत रूप प्रस्तुत। फलतः छायावाद का जनक 'आँसू' है। समयावधि – सन् 1920 से लेकर सन् 1936 तक। 'कामायनी' छायावाद की अप्रतिम कृति।

प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1- गहरी आत्मनिष्ठता
2- रहस्य भावना का आरोप
3- परमात्मा और प्रकृति की रहस्यमयी एकानुभूति
4- ईश्वर का रहस्यपूर्ण वर्णन
5- कल्पना की प्रधानता
6- भावों की सूक्ष्म अभिव्यंजना
7- निराशा और कुण्ठा की प्रवृत्ति
8- दुःख और वेदना का आधिक्य
9- शैलीगत प्रतीकात्मकता
10- सांकेतिकता की प्रधानता
11- सौन्दर्य बोध की प्रवृत्ति
12- कला और कल्पना की ऊँची उड़ान
13- लाक्षणिकता
14. नारी का विविध रूपों में वर्णन

Scanned with CamScanner

प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

जयशंकर प्रसाद — कामायनी, झरना, आँसू, लहर
सुमित्रानन्दन पन्त — पल्लव, युगान्त, ग्राम्या, युगवाणी, उत्तरा, गुंजन आदि
सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला — बेला, नये पत्ते, आराधना, कुकुरमुत्ता आदि
महादेवी वर्मा — नीहार, नीरजा, दीपशिखा, सान्ध्यगीत आदि
बालकृष्ण शर्मा नवीन — कुंकुम, रश्मिरेखा, अपलक, क्वासि, उर्मिला, हम विषपायी जनम के, प्राणार्पण
सुभद्राकुमारी चौहान — त्रिधारा, मुकुल
माखनलाल चतुर्वेदी — हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिनी, समर्पण, माता, मरण-ज्वार

छायावाद के चार स्तम्भ :
1. जयशंकर प्रसाद
2. सुमित्रानन्दन पन्त
3. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
4. महादेवी वर्मा

प्रगतिवाद : सन् 1935 में प्रगतिवाद का जन्म। सन् 1935 में पेरिस में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना। अध्यक्ष — ई० एम० फार्स्टर। भारत में प्रथम अधिवेशन सन् 1936 में लखनऊ में। अध्यक्ष — प्रेमचन्द। सन् 1938 में सम्पन्न हुए अधिवेशन के अध्यक्ष रवीन्द्रनाथ टैगोर। प्रगतिवाद का मूलाधार ~~का~~ मार्क्सवाद। मार्क्सवादी विचारधारा के पिता जर्मनी का प्रोफेसर कार्ल मार्क्स। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद ही मार्क्सवाद। पूँजीवाद का नाश कर आर्थिक समानता और वर्गहीन समाज की स्थापना करना मार्क्सवाद का मूल उद्देश्य।

मुख्य प्रवृत्तियाँ :
1. शोषित वर्ग की वकालत
2. क्रान्ति में विश्वास
3. धर्म एवं ईश्वर विहीन सांस्कृतिक समन्वय की उत्कट भावना

Scanned with CamScanner

4- यथार्थवादी भावना की प्रधानता
5- सहज प्रेम का वर्णन
6- नारी के मांसल रूप का वर्णन
7- वर्ग-संघर्ष में विश्वास
8- भाषा-अलंकार आदि में नवीनता का समावेश

प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

निराला — अणिमा, कुकुरमुत्ता, नए पत्ते, बेला आदि
पन्त — पल्लव, युगान्त, ग्राम्या, युगवाणी, ग्राम्या, उत्तरा, गुंजन आदि
रामधारी सिंह दिनकर — रेणुका, हुंकार, रसवंती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, सामधेनी, उर्वशी आदि
नागार्जुन — युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें, तालाब की मछलियाँ, पत्रहीन नग्न गाछ
नरेन्द्र शर्मा — प्रभात फेरी, शूल-फूल, पलाशवन, कर्णफूल, प्रवासी के गीत, बहुत रात गए
रामेश्वर शुक्ल अंचल — मधुकर, अपराजिता, किरण बेला, करील, लाल चूनर, विराम चिन्ह, वर्षान्त के बादल
त्रिलोचन — मिट्टी की बारात, धरती

प्रयोगवाद : प्रयोगवाद का जन्म सन् 1943 में प्रकाशित 'तारसप्तक' से माना जाता है जिसके सम्पादक सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय थे। 'तारसप्तक' के 3 संस्करण प्रकाशित — ~~प्रथम (प्रथम) सन् 1943, द्वितीय~~ ~~प्रथम~~ पहला तारसप्तक सन् 1943, दूसरा तारसप्तक सन् 1951 तथा तीसरा तारसप्तक सन् 1959 में प्रकाशित। जिनमें से रामनारायण त्रिपाठी, भारती चौधरी, मदन वात्स्यायन, केदारनाथ सिंह, कुंवर नारायण,

विजय देव नारायण साही, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, भवानी प्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर, रामविलास शर्मा और अज्ञेय की कविताएँ शामिल हैं।

मुख्य प्रवृत्तियाँ : 1. मूलतः पलायनवादी काव्य

2. प्रबुद्ध चेताओं का साहित्य
3. नूतनता के प्रति अत्यधिक मोह
4- मांसल प्रेम और दमित वासना की अभिव्यक्ति
5. मानव-शक्ति में ही विश्वास की स्थापना
6. शिल्प-क्षेत्र में नित्य नवीन प्रयोगों की अतिशयता
7. वैयक्तिक कुण्ठाओं की अभिव्यक्ति की प्रधानता
8- साधारणीकरण का पूर्णतः लोप
9- भाषा का एकान्त और अनर्गल प्रयोग
10- उपचेतन मन के अनुभव-खण्डों का यथावत चित्रण

प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय — आँगन के पार द्वार, हरी घास पर क्षणभर, इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये, बावरा अहेरी, इत्यलम आदि

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना — काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी, जंगल का दर्द, खूटियों पर टंगे लोग

भवानीप्रसाद मिश्र — ~~प्रभात फेरी~~, गीत फरोश, बुनी हुई रस्सी आदि

नरेश मेहता — वनपाखी सुनो, संशय की एक रात

कीर्ति चौधरी — खुले हुए आसमान के नीचे

भारत भूषण अग्रवाल — एक उठा हुआ हाथ, अनुपस्थित लोग

Scanned with CamScanner

केदारनाथ अग्रवाल — फूल नहीं रंग बोलते हैं
गजानन माधव मुक्तिबोध — चाँद का मुँह टेढ़ा है
शमशेर बहादुर सिंह — तारसप्तक में कविताएँ शामिल
कुँवर नारायण — आत्मजयी

नई कविता : नई कविता का आरम्भ सन 1940 के आसपास। स्पष्ट रूप मिला 'निराला' के 'नये पत्ते' ~~(1954)~~ (सन 1954) से। सन 1960 में नई कविता की एक निश्चित परम्परा उपलब्ध। 'नई कविता' का नामकरण अज्ञेय की ही देन। सन 1950 में प्रयोगवाद के स्थान पर 'नई कविता' नाम से प्रयोगवादी कवियों का अर्द्धवार्षिक काव्य संकलन प्रकाशित। सम्पादक - डॉ० जगदीश गुप्त। आलोचकों के अनुसार 'नई कविता' प्रयोगवाद का छद्म नाम। आगे चलकर इसी की तर्ज पर नई कहानी, सचेतन कहानी, अकहानी, अकविता, ठोस कविता, साठोत्तरी कविता, क्रुद्ध पीढ़ी की कविता, नवगीत, प्रगीत, अगीत आदि-आदि नए नामों से उपधाराओं या 'वादों' का निर्माण।

मुख्य प्रवृत्तियाँ

1- नवीन प्रतीकों एवं बिम्बों का प्रयोग
2. विश्व-बन्धुत्व की भावना का प्रबल प्रचार-प्रसार
3- विघटनकारी प्रवृत्तियों का जोरदार खण्डन
4- सामाजिक एवं आर्थिक वैषम्य पर करारा व्यंग्य
5. नवीन लय और भाषा का प्रयोग
6- युद्ध की विभीषिका के आतंक का परिचय
7- राष्ट्रीय एकता की प्रबल भावना

Scanned with CamScanner

8- मानव-शक्ति के प्रति गहरी आस्था का स्वर
9- प्रेम के नए रूप की कल्पना
10- समय के प्रति विशेष जागरूकता
11- नवीन सम्भावनाओं का दर्शन
12. नव मानव की कल्पना
13- ~~समसामयिकता~~ एवं नवीन वास्तविकता की अभिव्यक्ति
14- महादेशीय स्वर की प्रधानता
15. अस्तित्ववाद की अभिव्यक्ति
16. मानवता की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति
17. नाद-सिद्धान्त एवं साधारणीकरण की सर्वथा उपेक्षा
18. अतिशय बौद्धिकता

प्रमुख कवि : गिरिजाकुमार माथुर, डॉ० जगदीश गुप्त, नागार्जुन, निराला, चिरंजीव, केदारनाथ अग्रवाल, नरेन्द्र शर्मा, रामकुमार चतुर्वेदी, नीरज, बालस्वरूप राही, सोम ठाकुर, वीरेन्द्र मिश्र, घनश्याम अस्थाना, भारत भूषण अग्रवाल, रमेश कुन्तल मेघ, कन्हैया, रवीन्द्र भ्रमर, भदौरिया, कमला चौधरी, नरेश चन्द्र, अज्ञेय, लक्ष्मीकान्त वर्मा, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, भवानी प्रसाद मिश्र, शकुन्त माथुर, कुमारी राधा, श्रीराम शुक्ल, कैलाश वाजपेयी, शमशेर बहादुर, मलयज आदि।

~~~
~~~